श्री शंभवनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री शंभवनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शम्भवनाथ विधान

जय बोलिये

हर कार्य को संभव करने वाले,
हर समस्या को हरने वाले,
आत्मा में रमने वाले,
मोक्ष में विहार करने वाले,
संसार द्वन्द्व हरने वाले,
भक्तों की झोली भरने वाले
परमपूज्य
श्री शम्भवनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : हे शारदे माँ, हे शारदे माँ.....)

हे! नाथ शंभव, विनय आपकी हो।
इस भक्त पर भी, कृपा आपकी हो॥

प्रभु आपने तो, भुलाया जमाना।
तभी आपको तो, पुकारे जमाना॥
पुकारा है हमने, हमें ना भुलाना।
हमें नाथ! खुद सा, तुरत ही बनाना॥
ये जल्दी समापन कथा पाप की हो।
इस भक्त पर.....॥ 1॥

हमें ही नहीं आप, सब को हो प्यारे।
तुम्हारी बदौलत, ये दौलत नजारे॥
तुम से ही जिंदा हैं, भू-नभ सितारे।
तुम्हीं श्वांस धड़कन हो जीवन हमारे॥
उसे गम क्या जिसने, तेरी जाप की हो।
इस भक्त पर.....॥ 2॥

मिली जिन्दगी तो, जिन्हें हमने सौंपी।
उन ही ने पीछे से, तलवार घौंपी॥
औकात मिट सी गयी तब हमारी।
सौगात तेरी से महकी है क्यारी॥
वो खुश जिसकी तूने कमी माफ की हो।
इस भक्त पर.....॥ 3॥

श्री शम्भवनाथ विधान

स्थापना

तन से तो दूरी रही, मन से नहिं प्रभु दूर।
दूरी मजबूरी मिटे, यों हो कृपा जरूर॥

(ज्ञानोदय)

शम्भवप्रभु के पद पंकज में, हमने शीश झुकाया है।
भाग्योदय पुण्योदय अब हो, यही भाव मन आया है॥
काल अनंत गंवाया हमने, शाम सबेरे नित टेरा।
विसराओ ना देर लगाओ, दो डेरा हर लो फेरा॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

(अडिल्ल)

मिथ्यामल को सम्यग्दर्शन धार दो।
अर्पित नीर हमें भव तीर उतार दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

ताप तनावों वाला हमसे दूर हो।
अर्पित चंदन हमको छाँव जरूर दो॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं.....।

यहाँ आप सम शाश्वत अक्षय कौन हैं।
पुंज चढ़ा के भक्त आपके मौन हैं॥

शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

विषय चाह से आत्म दाह हो रोज ही।
पुष्प चढ़ायें निज का खिले सरोज भी॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

भेदज्ञान बिन क्षुधा रोग का दुख बड़े।
मिले दवा नैवेद्य चढ़ाने हम खड़े॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

मोह घटा बस ज्ञान सूर्य से हारती।
मिले ज्ञान रवि अतः करें हम आरती॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

द्रव्य भाव नो कर्म हरें चिद्रूप को।
कर्म जलाने चढ़ा रहे हम धूप को॥
शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

त्याग पाप-फल जिनवर की जय बोलिए।
फल अर्पण कर द्वार मोक्ष का खोलिए॥

शम्भवप्रभु जी जिनेन्द्र अर्चना आपकी।
व्यथा-कथा हर बाधा हरती पाप की॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

(ज्ञानोदय)

अपनों ने तो बस ठुकराया, लेकिन सद्गुरु अपनाये।
सद्गुरु ने ज्यों अपनाया तो, शरण आपकी हम पाये॥
अर्घ चढ़ा विश्वास दिलायें, अगर हमें अपनाओगे।
शम्भवप्रभु अपने बाजू में, जल्दी हमको पाओगे॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, तज ग्रैवेयक स्थान।
गर्भ सुसेना के वसे, प्रभु शम्भव भगवान्॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शम्भवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किये सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायांजन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रंथ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्लपूर्णिमायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाये मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(सोरठा)

शम्भवप्रभु जिनराज, विश्वकार्य संभव करो।
गुण गायें हम आज, निज स्वभाव में अब धरो॥

(ज्ञानोदय)

जिनकी कृपा दया को पाकर, कार्य असंभव संभव हो।
जिनके नाम मात्र माला से, शुद्ध भावमय आतम हो॥
जिनके चरणा-चरण प्राप्त कर, मिलती इच्छित वस्तु हो।
उन शम्भवप्रभु के गुण गायें, बारम्बार नमोस्तु हो॥ 1॥

एक विमलवाहन राजा था, वह ऐसा करके चिंतन।
यह संसारी जीव मृत्यु के, बीच खोजता है जीवन॥
मोहकर्म के विकट उदय से, यमराजों के दाँतों में।
फँसकर भी बचना नहिं चाहे, धिक्! धिक्! मिथ्या बातों में॥ 2॥

सीमित आयु को यह प्राणी, शरण माँगता कण-कण में।
यह मत उसको यम के मुख में, पहुँचा देता क्षण-क्षण में॥
हाय! हाय! अज्ञानी चेतन, फिर भी ना वैराग्य धरे।
दुखवर्धक भव-चक्र भ्रमण के, कर्तव्यों से राग करे॥ 3॥

तृष्णा की संतप्त धूप से, आकुल व्याकुल होकर के।
विषय भोग की जीर्ण नदी के, तट की छाया पा करके॥
विषय भोग की करें सुरक्षा, और स्वयं को नष्ट करे।
अतः अनंतानंत भवों में, शुद्धातम को भ्रष्ट करे॥ 4॥

यह चिंतन कर विरक्त हो फिर, मोक्षमार्ग स्वीकार किया।
सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर पद बाँध लिया॥
फिर संन्यास क्रिया से तन तज, ग्रैवेयक अहमिन्द्र बने।
स्वर्ग त्याग शम्भव नृप बनकर, मेघ देख वैराग्य धरे॥ 5॥

नर तन में यम नर्तन करके, नर तन का ही नाश करे।
प्रथम दगा दे दाग बाद में, इस पर ना विश्वास करे॥
तन से राग भोग नीरस जो, मूरख उन्हें सरस समझें।
यह संसार असार जानकर, ज्ञानी इन्हें तजें सुलझें॥ 6॥

निज वैभव रत्नत्रय पाकर, जिन वैभव को पा जाओ।
आप स्वयं यमराज बनो तो, मृत्युंजय बन सुख पाओ॥
सार सार का सार ग्रहण हो, लौकान्तिक यों वचन कहे।
फिर सिद्धार्थ पालकी में प्रभु, बैठे वन को गमन करे॥ 7॥

दीक्षित होकर बने स्वयंभू, ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा।
सुरेन्द्रदत्त को प्रथम दान का, मिला पुण्य सौभाग्य अहा॥
चौदह वय छद्मस्थ गुजारी, बेलामय निज ध्यान लगा।
चार घातिया जड़ें उखाड़ी, पाया केवलज्ञान महा॥ 8॥

देवों ने कैवल्य महोत्सव, खूब मनाया नाच बजा।
अनंतचतुष्टय धारी प्रभु का, समवसरण फिर खूब सजा॥
जिसकी ज्योति 'जिन' से होती, 'जिन' के मोती चित् खोती।
जिन महिमा में गद्-गद् जिनकी, आतम रोती दुख धोती॥ 9॥

ऐसे शम्भवप्रभु ने सुन लो, चन्द्र तिरस्कृत कर डाले।
राहू केतु शनि कृष्ण शुक्ल के, पक्ष बहिष्कृत कर डाले॥
और अंत में एक माह जब, आयु कर्म अवशिष्ट रहा।
गिरि सम्मेदशिखर पर धारा, प्रतिमायोग विशिष्ट रहा॥ 10॥

जन्म शाम को मोक्ष शाम को, पाये नंतकाल विश्राम।
कार्य असंभव संभव करने, भक्त मुक्ति को करें प्रणाम॥
मिले चिदातम निज शुद्धातम, अगर कृपा हो तेरी नाथ।
अतः भक्ति का रचा उपक्रम, रहे हमारे सिर पर हाथ॥ 11॥

पर जिन महिमा जो नहिं जाने, जिन्हें आप पर नहिं विश्वास।
यहाँ-वहाँ सिर फोड़े भटकें, करके अपना सत्यानाश॥
गुरुग्रह का वस करें निवारण, नाथ!आपका भजकर नाम।
वे क्या जानें शम्भव प्रभु जो, दें भव सुख भी दें निर्वाण॥ 12॥

सभी समस्याओं को हमने, बड़ा अभी तक मान लिया।
अतः समस्याओं ने हमको, चैन छीन दुख दान दिया॥
लेकिन शम्भवनाथ बड़े हैं, 'सुव्रत' ने पहचान लिया।
बड़ी समस्या कभी न हो सो,जिनपद का सम्मान किया॥ 13॥

(दोहा)

अश्व चिह्नमय शोभते, जिनवर शम्भवनाथ।
विश्व समस्या दूर हो, अतः नमें हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शम्भवप्रभु स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, शम्भवप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

विधान अर्घ्यावली

(चौपाई)

उपशम सम्यग्दर्शन तज के, क्षायिक पाये प्रभु को भज के।
पायें हम श्रद्धा वरदान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 1॥

ॐ ह्रीं संकल्पशक्तिप्रदाता श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उपशम सम्यक् तजे चरित्रा, बने स्वरूपे चरणं चित्रा।
पायें चरणाचरण महान्, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 2॥

ॐ ह्रीं संस्कारगुणप्रदाता श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अभयदान क्षायिक तुम त्यागे, सिद्धालय में आप विराजे।
दो हमको करुणा का दान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 3॥

ॐ ह्रीं क्रूरभावविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

क्षायिक लाभ आपने छोड़ा, मुक्ति रमा से नाता जोड़ा।
कोई कभी न हों हैरान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 4॥

ॐ ह्रीं लाभ-हानिबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

स्वामी! क्षायिक भोग तजे हैं, चिदानन्द में खूब मजे हैं।
चिदानन्द दो शुद्ध महान्, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 5॥

ॐ ह्रीं भोगबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु! क्षायिक उपभोग तजे हैं, सिद्ध गुणों से खूब सजे हैं।
स्वानुभूति दो सिद्ध महान्, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 6॥

ॐ ह्रीं अभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तजकर क्षायिक वीर्य जिनेशा, बने शुद्ध आतम सिद्धेशा।
आत्मशक्ति हम पायें शान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 7॥

ॐ ह्रीं दौर्बल्यबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुमतिज्ञान पूरा हर डाला, आत्मज्ञान का मिला उजाला।
ज्ञान-शक्ति दो सम्यग्ज्ञान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 8॥

ॐ ह्रीं मन्दबुद्धिविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हर कर सुश्रुतज्ञान विभावी, ज्ञान पिण्ड मय हुये विरागी।
निज पर श्रुत की हो पहचान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 9॥

ॐ ह्रीं आगमविरुद्धमान्यता विनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अवधिज्ञान तज बने अनंता, ज्ञान स्वभावी सिद्ध महंता।
दो मर्यादित पथ आसान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 10॥

ॐ ह्रीं आत्मभ्रांतिविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्ञान मनःपर्यय के नाशी, निज में तिष्ठत स्व-पर प्रकाशी।
चंचल मन पर लगे लगाम, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 11॥

ॐ ह्रीं मनोविकारविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुमतिज्ञान को धूल चटायी, जिनशासन की ध्वज फहरायी।
बनें दिगम्बर पूज्य महान्, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 12॥

ॐ ह्रीं मिथ्यामतखण्डनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुश्रुतज्ञान आपने खोया, मिथ्याशासन फक्-फक् रोया।
उच्चासन पायें आसान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 13॥

ॐ ह्रीं श्रुतविकारविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विभंगज्ञान का किया सफाया, निजानुभूति का अमृत पाया।
हो जयवन्त श्रमण उत्थान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 14॥

ॐ ह्रीं शिथिलाचारविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आप चक्षुदर्शन के नष्टा, निज में रमते ज्ञाता-दृष्टा।
हमको मिले भेद-विज्ञान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 15॥

ॐ ह्रीं दर्शनदोषविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आप अचक्षुदर्शन हारी, निज मय लोका-लोक निहारी।
विश्वशांति हो जग कल्याण, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 16॥

ॐ ह्रीं देहदोषविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अवधिदर्शन को तुम त्यागे, भाव पराश्रित डरकर भागे।
शत्रु-मित्र को सम पहचान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 17॥

ॐ ह्रीं पराश्रयदोषविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दान क्षयोपशम आप तजे हो, लोक शिखर चित्रूप वसे हो।
आतम ज्ञान ध्यान दो दान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 18॥

ॐ ह्रीं दातादानबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय.....।

लाभ क्षयोपशम तजे देव हो, बने आप खलु चिच्च देव हो।
दो चिद्रूपभाव का गान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 19॥

ॐ ह्रीं आहारबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोग क्षयोपशम के तुम त्यागी, बन बैठे आतम के स्वादी।
पायें परमानन्द रुझान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 20॥

ॐ ह्रीं सांसारिकबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तजे क्षयोपशम के उपभोगा, शुद्धातम निजमय उपयोगा।
दो आसान शुद्ध गुण खान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 21॥

ॐ ह्रीं उभयलोकबाधाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वीर्य क्षयोपशम तजकर वीरा, आप बने चैतन्य शरीरा।
हम पायें चेतन बलवान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 22॥

ॐ ह्रीं पराजयभावविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तजे क्षयोपशम सम्यग्दर्शन, तरस रहे हम करने दर्शन।
पायें वीतराग विज्ञान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 23॥

ॐ ह्रीं कुतत्त्वश्रद्धाविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तजे क्षयोपशम चरण सहारा, ''चारित्तं खलु धम्मो'' धारा।
देना हमें भेद-विज्ञान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 24॥

ॐ ह्रीं कुसंस्कारविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तजे संयमासंयम स्वामी, आप बने यमराज विरामी।
पायें ब्रह्मरूप निजपान, जय-जय हो शम्भव भगवान्॥ 25॥

ॐ ह्रीं हिंसाप्रवृत्तिविनाशनसमर्थ श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(सखी)

गति नरक भाव तुम तज के, चैतन्य बने दुख तज के।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 26॥

ॐ ह्रीं नरकगतिविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वध बंधन पशु गति हर्त्ता, प्रभु नहिं हैं भोक्ता कर्त्ता।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 27॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नर गति का चक्र मिटाया, सुख सिद्ध चक्र का भाया।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 28॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुर गति त्यागी विष थैली, फिर पाये मुक्ति सहेली।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 29॥

ॐ ह्रीं सुरगतिविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

धर क्षमा क्रोध तज पाये, अप्पा आपे में लाये।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 30॥

ॐ ह्रीं क्रोधविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पथ मान त्याग का भाया, मक्खन आतम का खाया।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 31॥

ॐ ह्रीं मानविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु तुमने माया मारी, सो पायी शिवपुर गाड़ी।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 32॥

ॐ ह्रीं मायाविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तज लोभ बनें निज लोभी, सो बन बैठे निज-भोगी।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 33॥

ॐ ह्रीं लोभविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु नारी वेद नशाये, पर मुक्ति रमा अपनाये।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 34॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु पुरुष वेद हर डाले, पर निज वेदन चख डाले।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 35॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु वेद नपुंसक हारी, चैतन्य दशा शृंगारी।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 36॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु मिथ्यादर्शन त्यागे, निज दर्शन धर निज पागे॥
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 37॥

ॐ ह्रीं मिथ्यादर्शनविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अज्ञान तजे छद्मस्था, सर्वज्ञ बने निज स्वस्था।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 38॥

ॐ ह्रीं अज्ञानविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु तजे असंयम पूरा, सज बैठे संयम शूरा।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 39॥

ॐ ह्रीं असंयमविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तज असिद्धत्व जंजाला, प्रभु सिद्ध बने गुणमाला।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 40॥

ॐ ह्रीं असिद्धत्वविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु लेश्या कृष्ण नशाये, चित भाव शुद्ध फल पाये।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 41॥

ॐ ह्रीं कृष्णलेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब लेश्या नील नशायी, गुण गाने दुनियाँ आयी।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 42॥

ॐ ह्रीं नीललेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

लेश्या कापोत हरण कर, शिव पहुँचे मुक्ति वरण कर।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 43॥

ॐ ह्रीं कापोतलेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु लेश्या पीत विनाशे, चिद्रूप अवस्था वासे।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 44॥

ॐ ह्रीं पीतलेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु लेश्या पद्म नशाये, पर परिणति दूर भगाये।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णा ते भगवंता॥ 45॥

ॐ ह्रीं पद्मलेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु तजे शुक्ल लेश्या को, बन गये मोक्ष हिस्सा वो।
जय शम्भवप्रभु शिवकंता, जय धण्णाते भगवंता॥ 46॥

ॐ ह्रीं शुक्ललेश्याविभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(लय : भव-वन में....)

चैतन्य दशा जो जीवों की, उसमें कर्मों का हाथ नहीं।
वो भाव पारिणामिक होता,जिसमें पर का कुछ साथ नहीं॥

वह भव्य भाव कहलाता है, जो रत्नत्रय प्रकटा देता।
जब सिद्ध बने तो भाव वही, शिव आतम दूर हटा देता॥
भव्यभाव बस प्रकट हो, जो है टिकिट समान।
शम्भवप्रभु सम शीघ्र हम, बनें सिद्ध भगवान्॥47॥

ॐ ह्रीं भव्यप्रकाशीभव्यभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वे कितने भी पुरुषार्थ करें, पर रत्नत्रय प्रकटा न सके।
वे हाय! जीव कैसे होंगे, जिनको करुणा पिघला न सके॥
है चित्र विचित्र यही घटना, पर दुख से भव्यातम रोती।
नित जीव अभव्य सहें भव दुख, ऐसी भी क्या परिणति होती॥
पीर अभव्यों की हरो, शम्भव प्रभु भगवान्।
सुखी रहें जग जीव सब, ऐसा दो वरदान॥ 48॥

ॐ ह्रीं अभव्यभावरहिताय श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

हम शुद्ध-बुद्ध चैतन्य पिण्ड हैं, चिदानन्द आनन्द-कंद।
पर भाव विभाव हुआ चेतन, तो राग-द्वेष जग द्वन्द्व-फंद॥
अब दया करो या प्रभु करुणा, हे नाथ! आपका हाथ मिले।
बस शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, बनने मुक्ति का साथ मिले॥
परभावों का नाश हो, मिले शुद्ध निज भाव।
अतः अर्घ अर्पण करें, शम्भव प्रभु की छाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय नमो नमः॥

समुच्चय जयमाला

जो पर्यायें मिल रही, वो परभाव विभाव।
शम्भवप्रभु को हो नमन, चित भावाय स्वभाव॥
शुद्ध भाव में रमण को, गायें हम गुणमाल।
हो परभाव विभाव क्षय, जय-जय हो जयमाल॥

(सुविद्या) (लय- बारह भावना)

जय शम्भवप्रभु जय शम्भवप्रभु, जय शम्भवप्रभु नाथ।
जिनवर में चैतन्य झलकता, अतः झुकाया माथ॥
कृपा चाहिए बस इतनी सी, सुनते रहना बात।
साथ मिले या नहीं मिले बस, सिर पर रख दो हाथ॥ 1॥

अगर आप ने हाथ रखा तो, होगा तुम से राग।
होता प्रभु से राग वही तो, कहलाता वैराग्य॥
अगर हमें वैराग्य हुआ तो, आग राग को नाश।
भक्त आपके पास विराजें, ऐसा है विश्वास॥ 2॥

हाथ साथ पर मिला न इससे, हुआ स्वभाव विभाव।
हाय-हाय! फिर राग कथायें, क्षण-भंगुर उलझाव॥
कभी क्षायोपशम उपशम आदिक, जो चैतन्य विभाव।
इनमें फँसना सुन लो भक्तो, है दुख का प्रस्ताव॥ 3॥

यह तो सब मन जाने समझे, फिर क्यों करता राग।
अब तक हम यह समझ न पाये, खिला न चेतन बाग॥
राग जलाने बाग खिलाने, लेकर आये आश।
अपने जैसा हमें बना लो, करना नहीं उदास॥ 4॥
नहीं भेंट में हम कुछ लाये, पर यह है विश्वास।
खाली हाथ नहीं लौटेगा, भक्त आपका दास॥
जिनवर! आप नहीं कुछ दें पर, हो अर्जी मंजूर।
फिर भी खाली लौटाने का, नहीं यहाँ दस्तूर॥ 5॥

या तो मन में प्रभु आओ या, हमें बुला लो पास।
मात्र प्रयोजन यही भक्त का, टूटे ना विश्वास॥
अच्छा बुरा बने या बिगड़े, सबमें तेरा नाम।
शुद्ध बनें ना जब-तक तब-तक, 'सुव्रत' करें प्रणाम॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

शम्भवप्रभु स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, शम्भवप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री शम्भवनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान्।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, शम्भवनाथ विधान॥
दो हजार तेरह मई, शुक्र दसक तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शभम् भूयात्॥

आरती

(लय : दिल के अरमां...)

पूजकर शम्भवप्रभु की मूर्ति।
सिर झुका, हम कर रहे हैं आरती॥

माँ सुसेना जित - अरि के पुत्र हो।
त्याग कर दुनियाँ धरे चारित्र हो॥
हम सभी के जिन दिगम्बर भारती।
सिर झुका.... ॥ 1॥

देखकर बादल दलों की फिरकियाँ।
खोल दी तुमने चिदातम खिड़कियाँ॥
मोह की जिससे घटायें हारतीं।
सिर झुका.... ॥ 2॥

देह-घट मरघट सा जिसमें विष भरा।
ज्ञान अमृत आपने तप से भरा॥
अब करो हमको अमर शिव सारथी।
सिर झुका.... ॥ 3॥

जिस पै हो करुणा कृपा जिनदेव की।
बाल न बांका उसका हो स्वयमेव ही॥
अब कृपा की धार दो जो तारती।
सिर झुका.... ॥ 4॥

नाथ! तेरी आरती सुबह शाम हो।
घी-दीया बाती न दूजा काम हो॥
आत्मा 'सुव्रतमुनि' की पुकारती।
सिर झुका.... ॥ 5॥